खयाल

स्निग्धा मोहनराज
II बि.ए. सोशियोलोजि

मेरे दिल के दरवाजे पे,
इस सुनहरे सवेरे में,
आकर खडा है कोई I
कोयल की मीठी-मीठी आवाज,
मेरे कानें में लहराकर,
मुझे बुला रहा हैं कोई
फूलों की खुशबू, तारों की चमक,
साझ की छाया, उषग कू खूबसूरती,
अजीब-सी लग रही है आज क्यों?
बारिश की पहली बूंद,
मिही की कैफी बास,
पुलकित कर रही है मूझे I
चुपके से आ गये जो,
मेरे माथे पे जाकरानी भरके

मेरी अगवानी कर रहा है कोई I
यादों की सूना पैगाम लेकर,
पैगंबर जैसा आ गया कोई,
खुशी बिरखराता हुआ, मेरी जिन्दगी में I
मेरे मन में आशा की पहली
तूणकेतु पैदा करके कोई,
अहिनसि मुझे तडपाती है I
दाझन है मुझे उससे ना मिलके,
मन की गालियें में मेरी,
झंकार का अटल सुर है I
बालिग मेरे ये खयाल कभी-कभी
मुझे बावली बनाकर ऐसे ही
मिट जाते हैं, मन के भीतर ही भीतर I

मुश्किल

अशोक मोहनराज

कहना जितना आसान है करना उतना नहीं ।
बहना जितना आसान है रूकना उतना नहीं ।।
झडना जितना आसान है लगाना उतना नहीं ।
खोना जितना आसान है पाना उतना नहीं ।।
जलना और जलाना तो आसान है ।
पर बुझना और बुझना नहीं ।।
गिरना और गिराना तो आसान है ।
पर उठना और उठाना नहीं ।।
मिटना - मिटाना बहुत आसान हैं ।
मगर बनना - बनाना तो नहीं ।।
हटना - हटाना बहुत आसान है ।
मगर मिलना - मिलाना तो नहीं ।।
फिरना और फिराना - हाँ! आसान है ।
लेकिन सजना और सजाना नहीं ।।
फँसना और फँसाना भी आसान है ।
लेकिन बचना और बचाना नहीं ।।
तोडना जितना आसान है जोडना उतना नहीं ।
टूटना जितना आसान है बाँधना उतना नहीं ।।
ढालना जितना आसान है भरना उतना नहीं ।
मरना जितना आसान है जीना उतना नहीं ।।

तू

नन्ही चिडिया तू है कहाँ ?
यह तो बात रे नीड काहाँ ?
तेरे बिना अब जीना नहीं ।
छोड के मुझे तू जाना नहीं ।
जान - ए जाना तू है जहाँ,
मेरी जान होगी वहाँ ।

बीते दीनों को क्या भूल सकती हो ?
प्रीतम से दूर हो के जी सकती हो ?
तेरी खातिर मन है जला !
तड़पा के यूँ क्या है मिला ?
चाहे कोई लाख कोशिश करे; पर तू न मिले !

उल्फत - बाहर बनके आती हो तुम ।
दिल का गुलाब खिलाती हो तुम
अलबेला मैं, सीधा - सादा,
तेरा मजाक है कुछ ज्यादा ।
तेरे लिए लाख आशीक मरें; पर तू न हिले!

जफना

II बि.एस सी, फिसिक्स

बारिश

आसमान में जन्म लेकर, अवनि से मिलन I
सारी दुनिया की नया जीवन लेकर, आन्मग से मिसन
अवागमन तक मन को विभोरकर, जग जीवन जाग उठा I
जल वाला तुम्हारा व्यवहार भी इस मानव जीवन का उत्थान II
अंत से जाग उठाकर, सागर में आराम I
सीपों में नये सुरज को जन्मकर, धेधे से मोती II
खाता मन भी उपरी, पावस से मयूरी के दिल I
बरस, बरस तुम बरस के तो भरते हो सबके दिल II
I यह जल भी आक्रमकारी, प्रकृति की आंचलन शेक I
शिश करते सागर, आसमान की छुने धरती की कठोर विभोर I
रती से आसमान तक का संचार, तू उठेगा वह निषकलंक जीव
ो भी इला सैम्य तू, आयेगा वह क्रोध भाव II

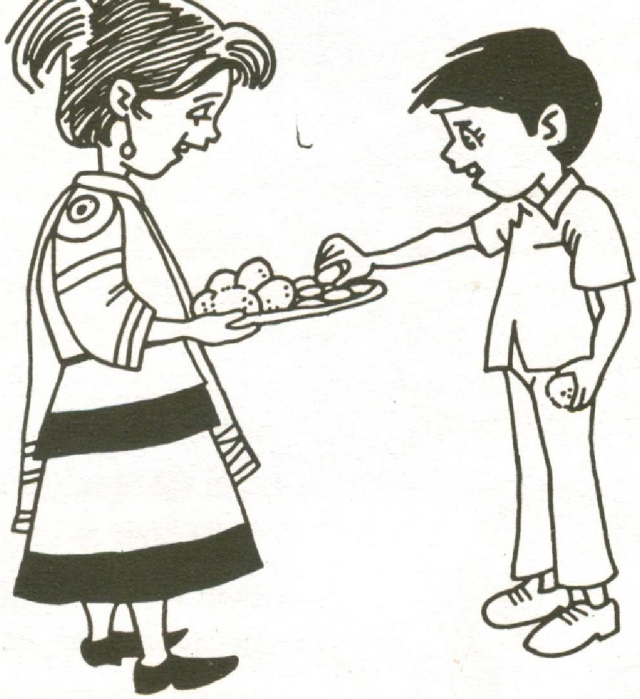

स्पर्श

निरजंना
II बि. कोम

उस्के पैरो मे गूंजती पायल की आवाज, उसके मधुर संगीत जैसी हलकी मुस्कान की अवाज, उस्के कोमल हायों का स्पर्श, सब देखने और महसूस करने के लिए वह ललायित हो रही थी I कितने दिन हो गये, मीनू की झलक भी पाकर, पर उमा का पूरा विस्वास था कि उस्की पाँच साल की प्यारी बिटिया जरुर वापस आयेगी I शांति के पति अमर को लगता था कि दे साल पहले अपनी बेटी के अपहरण के बाद उसकी पत्नी बिलकुल एक निरजीव की तरह हो गई है I रोज सुबह से लेकर शाम तक दरवाजे के पास ऐक कुर्सी लगकर अपने बेटी की राह देखती रहती है, न जाने क्यों, उसका विशवास नही ठूठता कि उसकी बेटी वापस आयेगी लेकिन शायद, इसी विश्वास के कारण वह जिन्दा है I

शांती का बडा बेटा राहूल जो दस साल का था, अपनी माँ के इस बरताव से बडा ही दुखी रहता था I उस दिन राहूल कक्षा मे प्रथम श्रेणी में पास हुआ, उसे स्कूल अध्यक्ष कि तरफ से एक तोफा भी मिला, बाद में अध्यापक ने राहूल से अपनी सफलता के पीछे जिनका हाथ है उनके बारे मे अपने कक्षा के छत्रों को कुछ बताने के लिऐ कहा I वापस धर आकर, अपने कोपी कमरे मे रखकर, जलदी से वह अपने नानी से मिलने उनके कमरे मे गया I नानी ने उसे गोद मे उठाकर पूछा, "क्यो बेटा आज बडा खुश लग रहा है, क्या हुआ?" "राहूल उछलते हुए बोला कि कक्षा मे प्रथम आने के कारण अध्यक्ष ने उसे एक तोफा दिया और अध्यापक ने उसकी लंगन की प्रशंसा करते हुए बाकी छात्रों को उस सफलता के पीछे के हाथों के बारे मे कुछ बताने को कहाँ I नानी ने उसे गले लगते हुए पूछा, "तुमने किस्को अपनी सफलता का कारण बताया, जरूर शांति ही तो है वह" I राहूल कि आँखी मे पानी बर गया वह बोला "नही नानी, मैने आपका नाम बताया, माँ तो मुझसे प्यार करती ही नही है, वे सिर्फ मीनू को चाहती है, हमेशा मीनू की राह दखती है, पापा कहते है की मीनू पढाई करनें बहुत दूर गयी है, मै भी पढाई कर रहा हूँ पर, माँ स्कूल से लोटने के लिए मेरी राह क्यों नही दखती, माँ सिर्फ मीनू से प्यार करती है I" "नही बेटा, माँ मीनु का इतजार इसलिए करती है क्योकी मीनु छोटी है, तुम्हारी माँ को तूम्हारी चिंता भी है, लेकिन अपना प्यार तुम पर ज्यादा जताकर पढाई से तुम्हारा ध्यान हटाना नही चाहती, वह तो मीनु और तुमसे अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करती है I दूसरे कमरे से अपने बेटे की शिकायत सुनकर शांती को बडा बुरा लगा I अब अपने बेटे को भी वह खोना नही चाहती थी I ऐइ वह जाकर राहुल को अपनी गोद मै लेकर बोली "मै तुम्हे मीनु से भी ज्यादा प्यार करती हूँ, और तुम ही तो मेरा सहारा हो, मुझे माफ कर दो बेटा" I